P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-IV, May-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

दूरस्थ षिक्षा के बी.एड. प्रषिक्षार्थियों की शैक्षिक प्रतिक्रियाएँ : एक अध्ययन पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ बिलासपुर के विशेष संदर्भ में

अध्ययन

अनिता सिंह
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
पं.सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय,छत्तीसगढ़,
बिलासपुर

प्रकृति जेम्स
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय,छत्तीसगढ़,
बिलासपुर

सारांश

दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा की वह प्रणाली है जिसमें शिक्षक तथा विद्यार्थी को स्थान विशेष पर मौजूद होने की आवश्यकता नहीं होती है। यह प्रणाली अध्ययन तथा शिक्षण के तौर–तरीकों के साथ गुणवत्ता संबंधी अपेक्षाओं से समझौता किए बिना प्रवेश मापदंड़ों के संबंध में भी उदार है। प्रस्तुत अध्ययन में पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ बिलासपुर के UTD में अध्ययनरत् पुरूष व महिला प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक प्रतिक्रियाओं का अध्ययन सर्वेक्षण विधि से किया गया है। प्रशिक्षार्थियों ने अध्ययन सामग्री, शिक्षकों के अध्यापन कार्य, नवीन शिक्षण विधियों, सम्पर्क कक्षाओं के आयोजन, निरन्तर शिक्षकों द्वारा परामर्श, मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षार्थियों की समस्या समाधान पर प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करते हुए संतोष व्यक्त किया है। निश्चित रूप से दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्रशिक्षित बी.एड. प्रशिक्षार्थी भी गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण के माध्यम से बेहतर शिक्षक बनाया जा सकता है।

मुख्य शब्दः दूरस्थ शिक्षा (Distance Education), सतत शिक्षा (Continuous Education), सेवारत कार्मिक (In –Service Teacher), प्रतिपुष्टि (Feedback), अन्तः क्रिया (Interactive),

प्रस्तावना

इवान इलिच की पुस्तक ड़ी स्कूलिंग सोसाइटी', पाल फ्रेरे की पुस्तक पेडागॉजी ऑफ दी ऑप्रेस्ड, जान होल्ट की पुस्तक हाऊ चिल्ड्रन फेल' आदि में प्रकाशित विचारो ने शिक्षा के स्वरूप परिवर्तन के विषय में एक क्रान्ति ला दी। तब शिक्षाविदों के मन में अनेक प्रश्न उत्पन्न हुए कि किसे कौन सी शिक्षा दें? कैसे दें ? ताकि कम शक्ति, धन व समय में सबकों उनकी आवश्यकतानुसार व योग्यतानुसार शिक्षा दी जा सके व शिक्षा किसी सीमित वर्ग व राज्यों तक न रहकर पिछड़े हुए इलाको, पहाड़ी क्षेत्रों व दूर दराज तक सबके लिए पहुचे। जिसमें किसी जाति, वर्ग सम्प्रदाय, धर्म संस्कृति तथा विशेष भाषा भाषी होने का कोई बन्धन न हो।

इन्ही कारणों से दूरस्थ शिक्षा जैसे नवीनतम सम्प्रत्यय शिक्षा जगत में आया और इसे सबको शिक्षा प्रदान करने का सषक्त माध्यम माना गया।

दूरस्थ शिक्षा शिक्षा की वह प्रणाली है, जिसमें शिक्षक तथा विद्यार्थी को स्थान – विशेष अथवा समय विशेष पर मौजूद होने की आवश्यकता नहीं होती है। यह प्रणाली, अध्यापन तथा शिक्षण के तौर–तरीकों तथा समय निर्धारण के साथ–साथ गुणवत्ता संबंधी अपेक्षाओं से समझौता किए बिना प्रवेश मानदंडों के संबंध में भी उदार है।

भारत की मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में राज्यों के मुक्त विश्वविद्यालय शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाएं तथा विश्वविद्यालय षामिल है, तथा इसमें दोहरी पद्धति के परम्परागत विश्वविद्यालयों के पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान भी शामिल है, यह प्रणाली सतत शिक्षा, सेवारत कार्मिकों के क्षमता उन्नयन तथा शैक्षिक रूप से वंचित क्षेत्रों में रहने वाले शिक्षुओं के लिए गुणवत्ता मूलक तर्कसंगत शिक्षा के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

दूरस्थ षिक्षा की विषेषताएँ

1. शिक्षक के स्थान पर अधिगम पर अधिक बल दिया जाता है अर्थात् सिखाने के स्थान पर सीखने पर अधिक बल दिया जाता है।

2. दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी को नियमित तौर पर किसी संस्था में जाकर पढ़ाई करने की जरूरत नहीं होती है।
3. विद्यार्थी अपनी गति व आवश्यकतानुसार सीखता है।
4. सूचना क्रांति और इन्टरेक्टिव के कारण दूरस्थ शिक्षा और आसान एवं प्रासांगिक हो गयी हैं।
5. विजुअल क्लासरूम लर्निंग,इटरैमिख आनसाइट लर्निंग और वीडियों कांफ्रेसिंग के जरिए विद्यार्थी देश के किसी भी राज्य में रहकर घर बैठे पढ़ाई कर सकते है।
6. विद्यार्थी स्वअध्ययन की प्रवृत्ति को विकसित करने में समर्थ होता है।
7. दूरस्थ शिक्षा में सम्पर्क कार्यक्रम के द्वारा शिक्षक और विद्यार्थी की एक दूसरे के सम्पर्क में लाने का प्रयास किया जाता है। इससे विद्यार्थियों कों अपने ज्ञान के सम्बन्ध में प्रतिपुष्टि मिलती है तथा उन्हें आवश्यक पुर्नबलन मिलता है।

मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न सुविधाएँ प्रदान करने के बाद भी विद्यार्थियों की दूरस्थ शिक्षा के प्रति विभिन्न प्रतिक्रियाएँ सामने आई हैं। सिंह (1980) खान (1982) पिल्लई मोटन (1982) साहू (1988) ने अध्ययन में पाया कि अधिकांश मामलों में दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन सामग्री नही पाई गई तथा वे संस्थाये नियमित प्रारूप का अनुसरण भी कम करते है। जबकि अधिकांश विद्यार्थियों ने विषयवस्तु के विभिन्न पहलुओं जैसे प्रस्तुति करण, अवधारणा की स्पष्टता,सन्दर्भ व भाषा के संबंध में उदार विचार प्रकट किए।

सिंह, रमेश चन्द (2009) ने मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन किया है और निष्कर्ष में पाया कि विद्यार्थी प्रयोगशाला में उपकरण भौतिक संसाधन, शिक्षण विधि,प्रतिपुष्टि प्रदान करना मूल्यांकन प्रणाली,विशेष शैक्षिक कक्षायें, सूचना प्रदान करना, परामर्श एवं निर्देशन जैसी समस्याओं का अधिक अनुभव किया।

उपयुक्त कारण से स्पष्ट होता है कि मुक्त विष्वविद्यालय के बी.एड. प्रशिक्षार्थियों को विभिन्न सुविधाएँ मिल रही है बावजूद इसके उन्हें विभिन्न समस्याओं का सामना भी करना पडता है, प्रस्तुत अध्ययन प्रशिक्षार्थियों द्ववारा अनुभव की जा रही मिली जुली प्रतिक्रियाओं पर केन्द्रित है।

अध्ययन का उद्देष्य

1. पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत पुरुश प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना।
2. पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत महिला प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि

अध्ययन में अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय के मुख्यालय परिसर (यू.टी.डी.) में अध्ययनरत् बी.एड. पाठय्क्रम के 100 प्रशिक्षार्थियों को शामिल किया गया है।

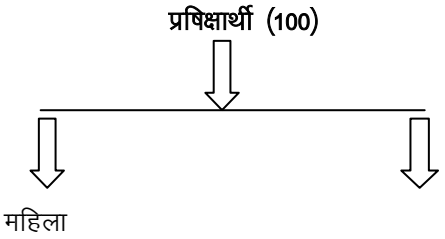

ifj.kke ,oa foospu

आंकडों के विश्लेषण से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए हैं

अध्ययन सामग्री की समय पर प्रषिक्षार्थियों को उपलब्धता

आंकड़ो से प्राप्त विश्लेषण में लगभग 56% पुरूष प्रशिक्षार्थियों एवं 44% महिला प्रशिक्षार्थियों ने अध्ययन सामग्री की समय पर उपलब्धता पर अपनी सहमति जताई हैं।

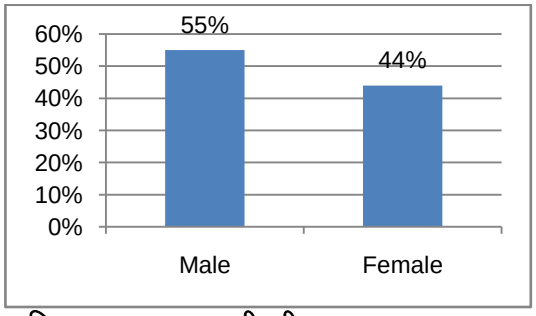

चित्र 1 अध्ययन सामग्री की समय पर उपलब्धता

सम्पर्क कक्षा की आवश्यकता लगभग 56.% पुरूष प्रशिक्षार्थी एवं 44.% महिला प्रशिक्षार्थियों ने सम्पर्क कक्षा की आवश्यकता को स्वीकार किया है।

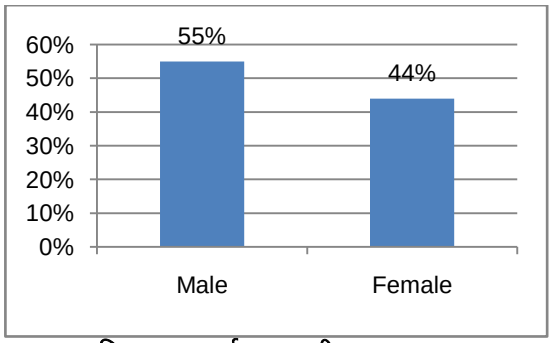

चित्र 2 सम्पर्क कक्षा की आवष्यकता

सम्पर्क कक्षाओं के दौरान शिक्षक कक्षा में केवल व्याख्यान विधि का प्रयोग करते है ।44% पुरूष एवं 32% महिला प्रशिक्षार्थियो ने सम्पर्क कक्षा के दौरान शिक्षक के केवल व्याख्यान विधि के प्रयोग पर असहमति प्रदर्शित की है जबकि केवल 12% पुरूष एवं 12% महिला प्रशिक्षार्थियों

ने शिक्षक के कक्षा में व्याख्यान विधि पर अपनी सहमति

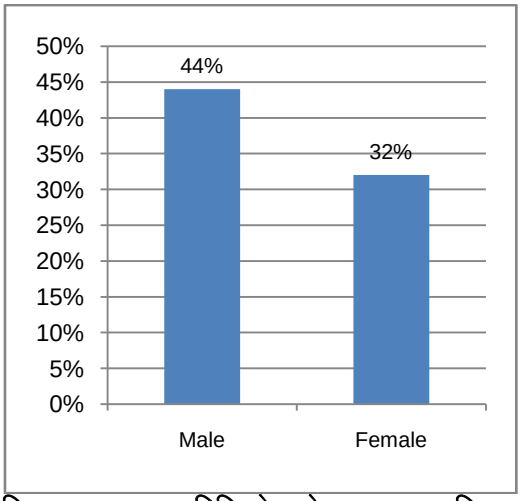

चित्र 3.1 व्याख्यान विधि के प्रयोग पर असहमति

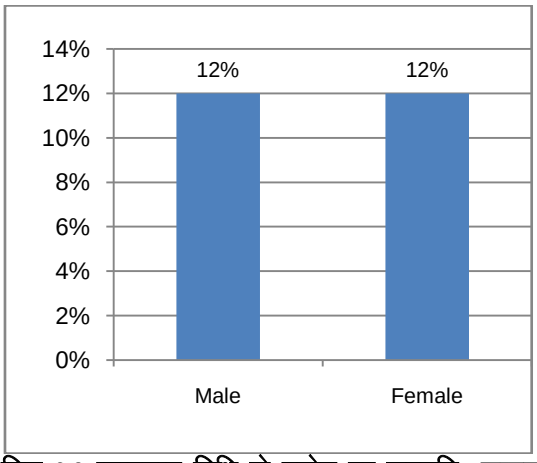

चित्र 3.2 व्याख्यान विधि के प्रयोग पर सहमति सम्पर्क कक्षाओं में प्रशिक्षार्थियों के अधिगम आवश्यकता का ध्यान रखा जाता है

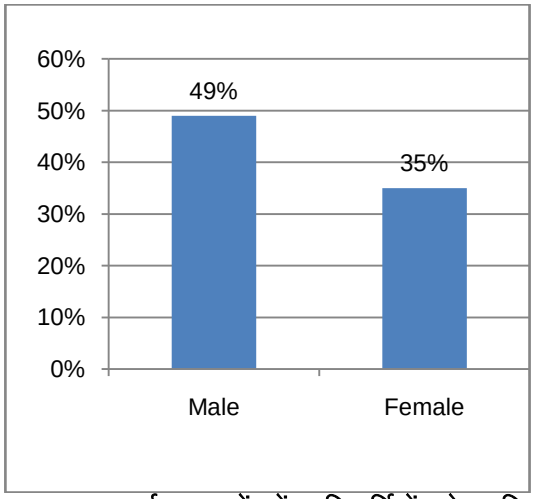

चित्र 4.1 सम्पर्क कक्षाओं में प्रषिक्षार्थियों के अधिगम आवष्यकता पर ध्यान पर सहमति

प्रदर्शित की है।

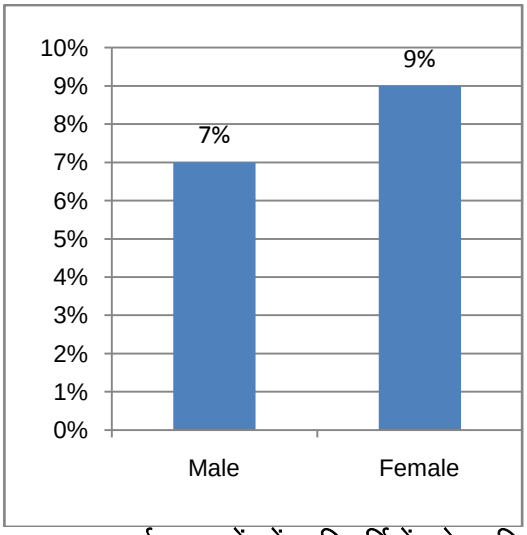

चित्र 4.2 सम्पर्क कक्षाओं में प्रषिक्षार्थियों के अधिगम आवष्यकता पर ध्यान पर असहमति

सम्पर्क कक्षा का आयोजन प्रशिक्षार्थियों की सुविधानुसार किया जाता है । 52% पुरूष प्रशिक्षार्थियों एवं 43% महिला प्रशिक्षार्थियों में सुविधानुसार सम्पर्क कक्षा के आयोजन में अपनी सहमति प्रदर्शित की है जबकि केवल 4% पुरूष व 1% महिला प्रशिक्षार्थियों ने इसे अस्वीकार किया है।

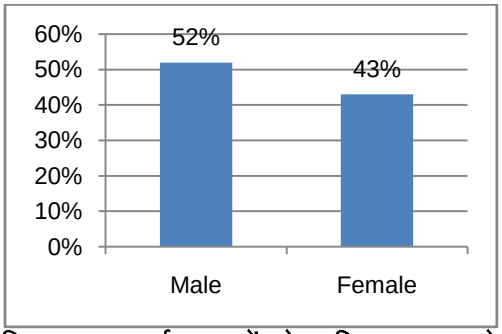

चित्र 5.1 सम्पर्क कक्षाओं के सुविधानुसार आयोजन पर सहमति

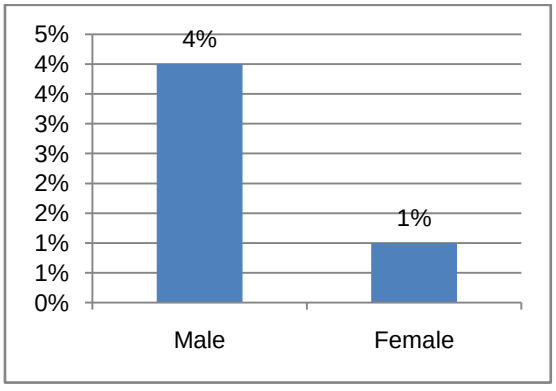

चित्र 5.2 सम्पर्क कक्षाओं के सुविधानुसार आयोजन पर असहमति

सम्पर्क कक्षा के दौरान अनुशासन का ध्यान रखा जाता है । 56% पुरूष व 44% महिला प्रशिक्षार्थियों ने कक्षा में अनुशासन को स्वीकार किया है।

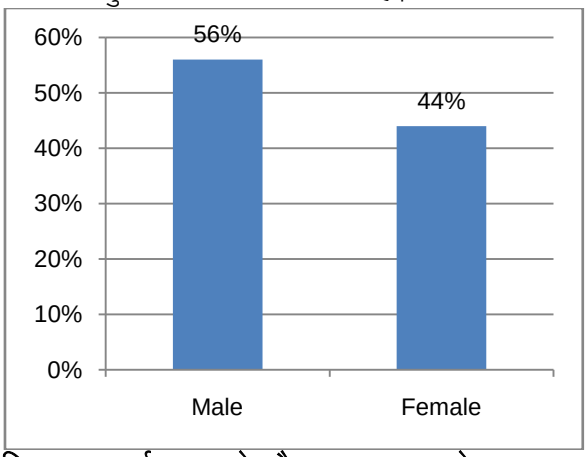

चित्र 6 सम्पर्क कक्षा के दौरान अनुषासन के ध्यान पर सहमति

सम्पर्क कक्षा में शिक्षक की अध्यापन में रूचि । 56% पुरूष एवं 44% महिला प्रशिक्षार्थियों ने स्वीकार किया है कि सम्पर्क कक्षा में शिक्षक पूरी रूचि व लगन से अध्यापन कार्य करते है।

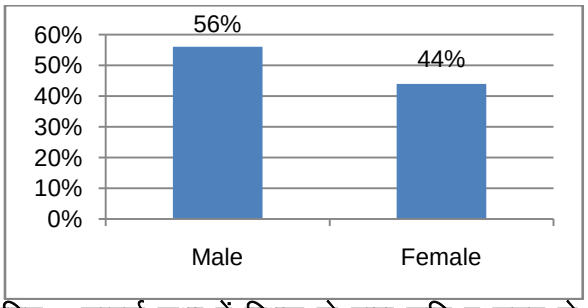

चित्र 7 सम्पर्क कक्षा में षिक्षक के द्वारा रूचि व लगन से अध्यापन कराने पर सहमति

शिक्षक द्वारा प्रशिक्षार्थियों की समस्याओं को सुना जाता है। 49% पुरूष एवं 39% महिला प्रशिक्षार्थियों ने प्रष्न पर सहमति दी है, जबकि केवल 7% पुरूष एवं 5% महिला प्रशिक्षार्थियों नें समस्याएँ न सुनने की बात कही है।

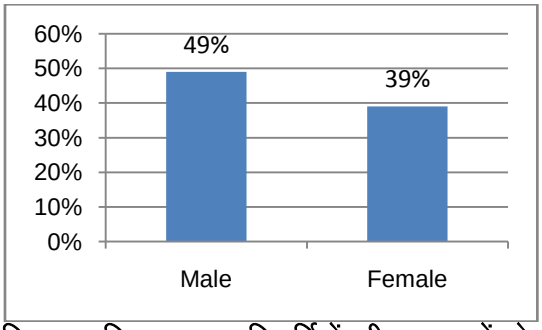

चित्र 8.1 षिक्षक द्वारा प्रषिक्षार्थियों की समस्याओं के सुने जाने पर सहमति

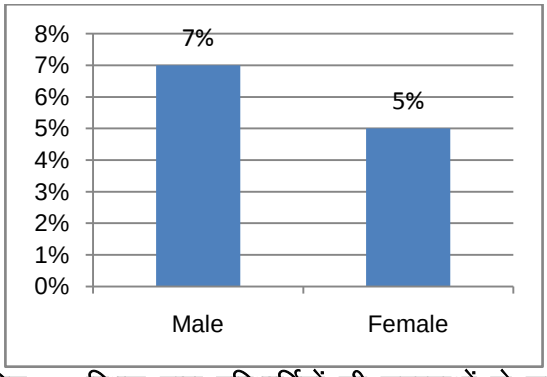

चित्र 8.1 षिक्षक द्वारा प्रषिक्षार्थियों की समस्याओं के सुने जाने पर सहमति

शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षार्थियों कों उनकी आवश्यकतानुसाार परामर्श व मार्गदर्शन दिया जाता है । 56% पुरूष एवं 44% महिला प्रशिक्षार्थियों ने प्रश्न पर अपनी सहमति दी है।

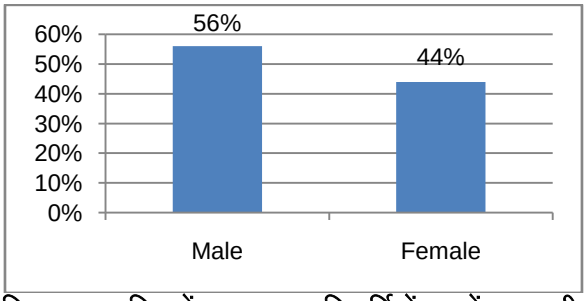

चित्र 9 षिक्षकों द्वारा प्रषिक्षार्थियों कों उनकी आवष्यकतानुसाार परामर्ष व मार्गदर्षन दिये जाने पर सहमति

कक्षा में शिक्षकों द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन से प्रशिक्षार्थियों को अध्ययन में सहायता मिलती है। 56% पुरूष एवं 44% महिला प्रशिक्षार्थियों ने शिक्षकों द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन से अध्ययन में सहायता को स्वीकार किया है।

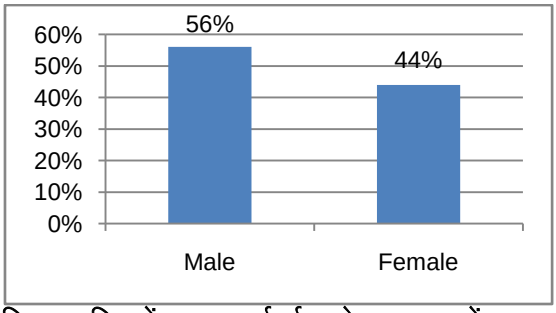

चित्र 9 षिक्षकों द्वारा मार्गदर्षन से अध्ययन में सहायता होने पर सहमति

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है दूरस्थ शिक्षा के शत प्रतिशत महिला व पुरूष बी.एड़. प्रशिक्षार्थी इस बात से सहमत है कि उन्हें विश्वविद्यालय द्वारा अधिगम सामग्री समय पर उपलब्ध कराई जाती है तथा सम्पर्क कक्षाएँ बी.एड. प्रशिक्षण में उनके लिए अत्यन्त उपयोगी हैं और इसकी नितान्त आवश्यकता है सम्पर्क कक्षा के दौरान अनुशासन व्याप्त रहता है तथा शिक्षक पुरी लगन व निष्ठा से अध्यापन कार्य करते है, प्रशिक्षार्थियों को समय समय

पर परामर्श प्रदान किया जाता है , जिससे लाभान्वित होकर प्रशिक्षार्थीगण अपनी अध्ययन संबंधी समस्याओं को दूर करने में समर्थ होते है।

अधिकांश प्रशिक्षार्थियों ने शिक्षक द्वारा समस्याएं सुनने का अभिमत दिया है जबकि 5% महिला व 7% पुरूष प्रशिक्षार्थियों ने यह अभिमत दिया है कि शिक्षक द्वारा उनकी समस्याएँ नहीं सूनी जाती है, अर्थात प्रश्न 8 पर हमे मिली जुली प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई, अधिकांश प्रशिक्षार्थियों ने यह भी स्वीकार किया है कि सम्पर्क कक्षा का आयोजन उनकी सुविधानुसार अर्थात अवकाश के दौरान किया जाता है, ताकि प्रशिक्षार्थियों की उपस्थिति शत प्रतिशत रहे, जबकि 1% महिला व 4% पुरूष प्रशिक्षार्थियों ने इसे अस्वीकार किया है, पुरूष व महिला प्रशिक्षाथियों की अधिकांश संख्या इस बात पर सहमत है कि सम्पर्क कक्षा में प्रशिक्षार्थियों की अधिकांश आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखा जाता है, व्याख्यान विधि के अतिक्ति अन्य विधियों का प्रयोग शिक्षक कक्षा में अध्यापन के दौरान करते हैं, बल्कि बहुत कम प्रशिक्षार्थियों का प्रतिशत यह दर्शाता है कि शिक्षक केवल व्याख्यान विधि का प्रयोग करते है तथा उनकी अधिगम आवश्यकताओं को ध्यान नहीं दिया जाता है ।

इसी तरह के मिले जुले परिणाम आंकड़ों के विष्लेशण से प्राप्त हुए है।

सुझाव

प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर यह सुझाव दिया जा सकता है कि वर्तमान परिस्थिति में सेवारत शिक्षको की बडी संस्था बी.एड. प्रशिक्षण के लिए दूरवर्ती शिक्षा से जुड़ रही है, इस हेतु शिक्षकों का दायित्व है कि वह गुणवत्ता पूर्ण प्रश्क्षिण देते हुए प्रशिक्षार्थियों की अपेक्षाओं को पूर्ण करें, शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण में नयी तकनीकों, नई विधियों कों शामिल करें। हम जानते है कि दूरस्थ षिक्षा में बी.एड. प्रशिक्षण हेतु ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों के सेवारत शिक्षक एक लम्बे अध्यापकीय अनुभव के साथ आते है, किन्तु वर्तमान योजनाओं व वर्तमान तकनीकों से वह परिचित होते हुए भी वह इसे अपनाने में अपने को अक्षम समझते है, इस बी.एड. प्रशिक्षण के द्वारा हमें प्रशिक्षार्थियों की इस असहजता को दूर करना होगा उनकी अधिगम आवश्यकताओं को ध्यान रखते हुए नई तकनीकियो, नई योजनाओं और नए परिवेश से उन्हे जोड़ना होगा, यह तभी संभव है जब शिक्षक स्वयं अपने को आधुनिक तकनीकियों से अपडेट (update) करता रहे तथा कक्षा में निरन्तरता, अनुशासन को ध्यान रखते हुए विद्यार्थियों की समस्याओं को सुने, उन्हे दूर करने हेतु उन्हे परामर्श व मार्गदर्शन देता रहे, केवल कक्षा में ही नहीं प्रशिक्षार्थियों को जब आवश्यकता हो के उनसे मिले उनकी समस्याओं का निराकरण करें, प्रशिक्षार्थियों के आस पास के परिवेश से भी शिक्षकों को परिचित होना आवश्यक है तभी सम्पर्क कक्षा के आयोजन का उद्देश्य पूर्ण हो पाएगा क्योंकि प्रशिक्षार्थियों की आवश्यकताओं व परिस्थितियों से परिचित होकर शिक्षक कक्षा में अपने शिक्षण को उनके आधार पर रूचिपूर्ण बना सकता है और शिक्षार्थी जुड़ने में सफल होंगे और बी.एड़. प्रशिक्षण की गुणवत्ता के अनुरूप प्रशिक्षित हो सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मित्तल, डां. सन्तोश (2006) शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा – कक्ष प्रबंन्धन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृष्ट–286
2. विकिपीडिया : दूरस्थ शिक्षा
3. भारती, शीतल एवं नीलम : मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन पृष्ट–270–277
4. Panda, Venkaiah, Garg, Puranik, (2006). Four Decades of Distance Education in India Reflections on Policy and Practice. Tracing the Historical Developments in Open and Distance Education .Viva Books Pvt.Ltd. 2006, p-14
5. Pulist, S. K. (2001). Student Support Services in Correspondence/Distance Education in India: A Historical Perspective. Journal of Distance Education, New Delhi.
6. Srivastava, Manjulika. (2002). A Comparative Study on Current Trends in Distance Education in Canada and India. Turkish Online Journal of Distance Education- TOJDE, 3 (4).
7. Shields, J. (1995) Distance learning nuts and bolts, *Technology & Learning*, 15 5, 44